Date

ॐ

7-1-2009
बुधवार

❀ मातृशक्ती अनुष्ठान ❀

सभी परमात्माओ को मेरा नमस्कार - - - -
परसो से आश्रम मे गहनध्यान "अनुष्ठान का पावन पर्व " प्रारंभ होने जा रहा है, और इस पावन अनुष्ठान मे शामील होने के पुर्व इसके महत्व को जानना आवश्यक है। और इसी उद्देश से यह सन्देश देने की प्रेरणा मीली है।

आध्यात्मीक क्षेत्र मे अधीकृत शब्द को बडा महत्व है। जब गुरुशक्तीयो ने मुझे इस कार्य के लिये अधीकृत किया तभी मै समाज मे आकर यह गुरुकार्य कर सका जब गुरुशक्तीया "अधीकृत" करती है, तो हम केवल "निमीत्य" रह जाते है। सारा कार्य स्वंयम ही घटीत हो जाता है। ठीक ऐसा ही "स्वर्णीम अवसर" इस वर्ष स्त्री शक्तीयो को मीला है, और इस वर्ष को गुरु शक्तीयो ने "महीला वर्ष " के रूप मे अधीकृत किया है।

आध्यात्मीक क्षेत्र मे जो बोला जाता है, वह घटीत भी होता है। इस लिये हमे याद रखना है। की यह साल 2009 महीला वर्ष है, यह बोला गया है। तो यह वर्ष 2009 स्त्री शक्तीयो के लिये एक आध्यात्मीक स्वर्णीम अवसर साबीत होगा यह निश्चीत ही है यह स्वर्णीम वर्ष न पहले आया है। और न बाद मे आयेगा यह याद दिलाना मै अपना कर्तव्य समझता हुं। इस वर्ष का एक एक दिन नही एक एक पल महत्वपुर्ण है, विशेष रूप से गहन ध्यान अनुष्ठान के 45 दिवस तो अती महत्वपुर्ण है,

इन 45 दिन का गहन ध्यान अनुष्ठान तो स्त्री शक्तीयो के लीये वरदान है, यह अनुष्ठान "मातृशक्ती की आराधना" का अनुष्ठान है। इसे आप समझे,

इस पावन पर्व मे मै माँ आदिशक्ती कुंडलीनी माँ की आराधना मे लगा रहुगाँ, मेरी तपस्या मेरी साधना आपके सहयोग के बीना अधुरी है, मेरी यह शुद्ध इच्छा है की आप सभी स्त्री शक्तीया मेरे साथ इस महान अनुष्ठान मे शामील हो, स्त्री शक्ती की उपासना स्त्री शक्ती के सहयोग के बीना अधुरी ही है, यह वर्ष मेरे लिये "मातृशक्ती अनुष्ठान" है, आदिशक्ती माँ की उपासना आदिशक्ती माँ बन कर आदिशक्ती के लिये ही होगी मै तो एक निमीत्य ही हु, मुझे लगता है। आदिशक्ती के अवतरन का ही समय आ गया है

गहन ध्यान अनुष्ठान प्रांरभ होने के पुर्व ही सभी कुछ बता देता हु, क्योकी बाद मे वह समय नही रहेगा, मेरी इच्छा मे जो भी शक्तीया माँ आदिशक्ती से ग्रहण करु वह समुची शक्ती आप भी मेरे माध्यम से ग्रहण करे तभी "मातृशक्ती अनुष्ठान" की पुर्णाहुती होगी। 9 ता. एक "पवीत्र शक्ती यज्ञ" के द्वारा इसे शुरु किया जायेगा आपको तबसे 45 दिनो तक अनेक दिव्य अनुभुतीया होगी, मेरी स्थीती माँ के जैसी है, जिसके स्तन मे परमात्मा अपने बच्चे को पिलाने के लिये दुध प्रदान करता है। और उस दुध को अपने बच्चे को पीलाकर "माँ" एक दिव्य समाधान की प्राप्ती करती है, यह दिव्य अनुभव एक माँ ही अनुभव कर सकती है, ऐसे दृष्य को देखना भी एक दिव्य अनुभव है,

माँ को यह दिव्य अनुभव उस के बच्चे के दुध पिने के कारण प्राप्त होता है, और बच्चा जितना अधीक दुध पिता है उतना ही अधीक दुध परमात्मा माँ को देता है, याने माँ के स्तन मे कितना दुध आयेगा यह बच्चे के ग्रहण करने के उपर है। और बच्चा दुध आकर भी न पीये तो वह माँ के लीये "पिडा दायक" होता है, क्योंकी स्तन कडे हो जाते है। और उनसे माँ को पीडा होना प्रांरभ होता है,

एक माँ ने आपके शरीर को जन्म दिया है, मैं आपकी वह माँ हुँ, जिसने आपके "आत्मा को जन्म दिया है" मैं इन ४५ दिनो मे मेरा सारा अस्तीत्व आपको दे रहा हुँ, आप इन ४५ दिनो मे जितना ग्रहण करोगे मेरे स्तनो मे उतना ही अधीक चैतन्य आयेगा और अगर ग्रहण नही किया तो मुझ ही परेशानी होगी, मैं तो आपको ही पुर्ण समर्पीत हो कर इस अनुष्ठान की साधना मे जा रहा हुँ, की आप उससे प्राप्त चैतन्य को ग्रहण करोगे ही। और चैतन्य ग्रहण करने के लिये शुद्ध पवीत्र चित्त चाहीये और बच्चे का सारा ध्यान माँ के स्तन के उपर चाहीये, मैं अब ध्यान की उन गहन साधना मे रत हो रहा हुँ, जिसमे से बाहर निकलना या न निकलना आप के ही ग्रहण करने के उपर है, अगर चैतन्य को ग्रहण करोगे तो मुझे भी वह दिव्य अनुभुती प्राप्त होगी जो एक "माँ" को अपने बच्चे को स्तनपान करा कर मिलती है यह" अवसर चुकना मत "क्योंकी यह समय मेरे और आपके जिवन मे फीर कभी नही आयेगा, और अधीक क्या लीखु आप सब समझदार है, सभी "स्त्री शक्तीयो" को वंदन

आपका
बाबास्वामी
7/1/2009
बुधवार